

भातेताअनुसं समाचार



IOPR

An ISO 9001:2008 Certified Institute

News



भाकृअनुप - भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान, पेदेवेगी - 534 450, आन्ध्र प्रदेश वेबसाइट : <http://dopr.gov.in>

माननीय सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप द्वारा भाकृअनुप - भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, पालोड़ का दौरा

डॉ. त्रिलोचन महापात्र, माननीय सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने दिनांक 20 अक्टूबर, 2016 को भाकृअनुप - भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, पालोड़ का दौरा किया। डॉ. महापात्र ने वहां खेत जीनबैंक एवं प्रयोगशालाओं का दौरा किया और वैज्ञानिकों व स्टाफ सदस्यों के साथ बातचीत की। डॉ. महापात्र ने विभिन्न कृषि जलवायु परिस्थितियों के लिए उपयुक्त जलवायु अनुकूल किस्में विकसित करने में संरक्षित जननद्रव्य का उपयोग करने और किसानों की आय को दोगुना करने के लिए रणनीतियां विकसित करने का सुझाव दिया।



निदेशक की कलम से

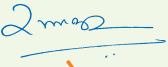
किसानों की आय दोगुना करने की दिशा में बढ़ते कदम



तेल ताड़ अनेक गुणों से सम्पन्न एक बहुमुखी कृषि फसल है जिसका उपयोग न केवल खाद्य तेल के रूप में किया जाता है, वरन् इसका उपयोग बायो-डीजल, लुब्रिकेन्ट्स तथा साबुन, डिटर्जेंट एवं कॉस्मेटिक्स अर्थात् सौंदर्य प्रसाधनों जैसे उपभोक्ता उत्पादों में भी किया जाता है। विश्व में भारत ही ऐसा एकमात्र देश है जहां इस फसल की खेती सिंचित परिस्थितियों में की जाती है। भारत में वनस्पति तेल की मांग और उत्पादन के बीच व्याप्त अन्तराल को कम करने के लिए केवल यही एकमात्र सशक्त विकल्प है। उत्पादन के मामले में इस फसल की क्षमताओं का पूरी तरह से दोहन नहीं किया गया है। इसमें जल व पोषक तत्वों जैसे संसाधनों का न्यायोचित प्रबंधन करने की आवश्यकता होती है। वनस्पति तेल की खपत और घरेलू उत्पादन के बीच व्याप्त अन्तराल जिसके कारण बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा खर्च होती है, को कम करने की दिशा में भारत सरकार तेल ताड़ की खेती के विस्तार करने के प्रति अत्यधिक इच्छुक है। तेल ताड़ के मामले में इसकी पेरिशेबल प्रकृति और साथ ही प्रसंस्करण कार्यविधियों के जुड़े होने के कारण अच्छी तरह से तैयार बाजार सुविधाओं की जरूरत होती है। अन्य देशों यथा मलेशिया और इन्डोनेशिया जहां तेल ताड़ को व्यापक क्षेत्रफल में उगाया जाता है, से अलग भारत में इसकी खेती छोटी जोत वाले किसानों द्वारा की जाती है। इसलिए, भारत में किसानों की आय को बढ़ाने हेतु रणनीतियां अन्य देशों के मुकाबले निश्चित तौर पर भिन्न हैं। पिछले 8 वर्षों के दौरान, तेल ताड़ विकास कार्यक्रम प्रारंभ करने से पहले की तुलना में तेल ताड़ के खेती क्षेत्रफल में तीन गुणा तक बढ़ोतरी हुई है और इसमें आन्ध्र प्रदेश, ओडिशा, मिजोरम, तेलंगाना व कर्नाटक का मुख्य योगदान है। आन्ध्र प्रदेश, केरल, तेलंगाना और गोवा के उत्पादकता स्तर में उत्पादकता वृद्धि हो रही है जबकि शेष राज्यों में या तो उपज स्तर में ठहराव देखा जा रहा है अथवा इसमें कमी देखी जा रही है।

एक कठोर फसल होने के कारण तेल ताड़ को अधिकांश प्रतिकूल परिस्थितियों को में भी उगामा जा सकता है। प्रकृति में आर्द्र उष्णकटिबंधीय होने के कारण इसमें जल, तापमान और आर्द्रता की कहीं अधिक जरूरत होती है। इसकी उत्पादकता को प्रभावित करने वाले कारक सभी राज्यों में लगभग एकजैसे हैं और स्थान विशिष्ट समस्याएं जल की उपलब्धता, परागक उत्तरजीविता, कटाई, मृदा की अम्लता, कम/अधिक तापमान, घटिया जल गुणवत्ता आदि से जुड़ी हो सकती हैं। देश के विभिन्न भागों में उपयोग की गई रोपण सामग्री में देशी तथा आयातित टेनेरा दोनों ही शामिल हैं और इन दोनों स्रोतों की उपज में कोई अधिक भिन्नता नहीं है। यदि उपयुक्त जलवायु क्षेत्र में उचित प्रबंधन किया जाए तब सिंचित परिस्थितियों के तहत बहुत अच्छी उपज के साथ इस फसल से चमत्कारिक परिणाम हासिल किए जा सकते हैं। सिंचाई की सूक्ष्म विधियों को अपनाकर न्यायोचित जल प्रबंधन किया जाना चाहिए जिससे लगभग 50 प्रतिशत तक जल की बचत की जा सकेगी। सिंचाई के माध्यम से उर्वरकों का प्रयोग किया जाना चाहिए जैसे कि उर्वरकों पर निवेश लागत को कम करने हेतु उर्वरीकरण तथा साथ ही कहीं अधिक प्रभावशीलता के साथ घटी हुई उर्वरक मात्रा का प्रयोग करना। कोको, बुश पेपर, लाल अदरक, हेलिकोनिया आदि जैसी आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद अंतर फसलों को उगाने से तेल ताड़ रोपण से अत्यधिक शुद्ध लाभ मिलता है।

जलवायु अनुकूल प्रौद्योगिकियों, संसाधन प्रबंधन तकनीकों, कृषि प्रणाली अनुसंधान तथा फार्म मशीनीकरण पर ध्यान केन्द्रित करते हुए तेल ताड़ के अंतर्गत किसानों की आय को बढ़ाने की दिशा में अनुसंधान प्रयासों को मजबूती प्रदान करने की जरूरत है। इसके अलावा, तेल ताड़ की खेती करने वाले किसानों को उनकी आय को बढ़ाने में विविधीकरण की महत्ता के बारे में और पशु-पालन, बकरी-पालन तथा पोल्ट्री जैसे अन्य संघटकों को कृषि प्रणाली में शामिल करने के संबंध में जागरूक करने की जरूरत है। मूल्य वर्धन के माध्यम से उत्पादित प्रयोजन हेतु अपशिष्ट उपयोगिता के विभिन्न विकल्पों के बारे में भी किसानों को जागरूक करने की जरूरत है। अंततः न्यूनतम समर्थन मूल्य और प्रतिकूल जलवायु/बाजार परिस्थितियों से मुकाबला करने हेतु फसल बीमा सुनिश्चित करके नीतिगत सहयोग प्रदान किया जाना चाहिये।


आर.के. माथुर

समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर

भाकृअनुप – भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान एवं डॉ. वाई.एस.आर. बागवानी विश्वविद्यालय, वेंकटरमन्नागुडेम, पश्चिम गोदावरि जिला, आन्ध्र प्रदेश के बीच दिनांक 19 दिसम्बर, 2016 को एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए।



भाकृअनुप – भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान तथा भाकृअनुप – राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (ICAR - NBPGR), नई दिल्ली के बीच दिनांक 14 फरवरी, 2017 को एक सहयोगी कार्यक्रम "तेल ताड़ जननद्रव्य का दीर्घावधि संरक्षण" पर एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए।



किसान कॉर्नर

- जैविकों का अनुप्रयोग करने से बेसिन में कहीं अधिक जल मात्रा को बनाये रखने में मदद मिलती है। बेसिन में अधिक जल मात्रा को बनाये रखने के लिए प्रति ताड़ 50 से 100 किग्रा. की दर पर गोबर की खाद/वर्मी-कम्पोस्ट/हरी खाद का अनुप्रयोग करने का सुझाव दिया जाता है।
- छांटी गई पत्तियों, नर पुष्पक तथा खाली फल गुच्छों के रूप में तेल ताड़ रोपण में बड़ी मात्रा में अपशिष्ट उपलब्ध रहता है। इस जैविक अपशिष्ट सामग्री के साथ पलवार करने से जल को कहीं अधिक मात्रा में बनाये रखने, खरपतवारों का नियंत्रण करने, जड़ क्षेत्र में अनुकूल तापमान को बनाये रखने के साथ साथ मशदा में जैविक सामग्री का समावेशन करने में मदद मिलती है। मूंगफली, केला, मक्का, उड़द, मूंग आदि जैसी किसी भी अन्य फसल के बायोमास का प्रयोग भी इस प्रयोजन हेतु किया जा सकता है।
- विशेषकर गर्मी के मौसम में फिल्टरों का अवरुद्ध हो जाना एक प्रचलित समस्या है। फिल्टर को जांचने और उचित जलापूर्ति सुनिश्चित करने में इन्हें स्वच्छ बनाये रखने की दिशा में विशेष सावधानी बरती जानी चाहिए।

अनुसंधान अद्यतन : उपलब्धियँ/नए परिणाम/नई पहल

उर्वरीकरण (Fertigation) के माध्यम से पोषक तत्व प्रबंधन (बी.एन. राव)

तेल ताड़ की उपज और रख-रखाव के लिए बड़ी मात्रा में पोषक तत्वों की जरूरत होती है। आमतौर पर उर्वरकों का प्रयोग अधिकांश स्थानों पर मृदा में अनुप्रयोग करके किया जाता है। उर्वरीकरण से प्रभावी उपयोगिता के कारण उर्वरक की मांग को कम करने की अपेक्षा की जाती है। परीक्षणों के परिणामों से इंगित हुआ कि मृदा के माध्यम से संस्तुत पोषक तत्व अनुप्रयोग की तुलना में क्षमताशील वाष्पोत्सर्जन (PET) के आधार पर सिंचाई के साथ मिलकर मासिक अन्तराल पर $N : P_2O_5 : K_2O @ 600 : 300 : 600$ ग्राम/ताड़/वर्ष के साथ उर्वरीकरण करने पर वयस्क तेल ताड़ में कहीं अधिक FFB उपज (> 23 टन/हे.) दर्ज की गई। मासिक अन्तराल पर उर्वरीकरण को अपनाकर अकेले उर्वरकों की लागत को 52 प्रतिशत (प्रति हेक्टेयर रुपये 4969/-) तक कम किया जा सकता है और साथ ही अनुप्रयोग लागत व निराई-गुड़ाई लागत में कमी लाई जा सकती है।



गमला मिश्रण सामग्री के रूप में POME (रामचन्द्रु, के.)

POME गाद एक तेल ताड़ मिल अपशिष्ट है जो कि मिल परिसरों में बड़ी मात्रा में उपलब्ध होता है। अतः भारत में तेल ताड़ की नर्सरी तैयार करने में अपघटित तेल ताड़ मिल प्रवाह अथवा रिसाव गाद @ 20% को गमले की मिट्टी में मिलाया जा सकता है। जब गमला सामग्री मिश्रण में 20 प्रतिशत तेल ताड़ मिल प्रवाह अथवा रिसाव (POME) गाद को मिलाया गया तब अनुपचार की तुलना में तेल ताड़ पौद की वृद्धि और ओजता में उल्लेखनीय सुधार देखने को मिला। हासिल किए गए परिणाम रासायनिक उर्वरकों का अनुप्रयोग करने के समतुल्य थे।

तेल ताड़ तना – इथानॉल एवं लैक्टिक अम्ल उत्पादन के लिए एक क्षमताशील स्रोत (के. मनोरमा)

तेल ताड़ तना सैप का इस्तेमाल सूक्ष्मजीव रूपांतरण के माध्यम से इथानॉल एवं लैक्टिक अम्ल उत्पादन के



लिए एक पोषाधार के रूप में किया जा सकता है। किसी एकल ताड़ से कुल 150-180 लिटर सैप निकाला जा सकता है। 30°C तापमान पर एस. सेरेविसी @ 10% v/v सांद्रता का उपयोग करके अवायुवीय किण्वन के माध्यम से 48 घंटों के भीतर तने में 50 प्रतिशत से अधिक शर्करा का रूपांतरण इथानॉल में किया जा सकता है। 72 घंटों की अवधि के लिए अवायुवीय परिस्थितियों के तहत लैक्टिक अम्ल उत्पादन के लिए लैक्टोकोकस लैक्टिस @ 10% v/v कहीं अधिक प्रभावी पाया गया। सिंचित परिस्थितियों के तहत पुनः रोपण करते समय तेल ताड़ रोपण के शुष्क बायोमास का अनुमान 57 - 59 टन प्रति हेक्टेयर लगाया गया। इसमें से, तने का योगदान लगभग 40 - 45 टन प्रति हेक्टेयर होता है।

तेल ताड़ गुच्छों को तोड़ने के लिए प्लेटफार्म (एम.वी. प्रसाद)

ऊंचे ताड़ से तेल ताड़ गुच्छों को तोड़ने के लिए ट्रैक्टर के 3 प्वाइंट लिंकेज से सम्बद्ध 15 फीट आर्म प्लेटफार्म के साथ किया गया परीक्षण संतोषजनक पाया गया। 35 फीट तक की ऊंचाई तक पहुंचने के लिए दरंती के साथ जुड़े एल्युमिनियम खंभे का उपयोग करके ऊंचे ताड़ वृक्षों से तेल ताड़ गुच्छों की तुड़ाई करने के लिए प्लेटफार्म का उपयोग किया गया।



लिटिल अंडमान से संकलित जननद्रव्यों का गुच्छा गुणवत्ता के लिए लक्षणवर्णन (पी. मुरुगेशन)

लिटिल अंडमान से ग्यारह भिन्न जननद्रव्य का संकलन किया गया (लंबी स्पाइकलेट स्पाइन, उर्वर पिंसिफेरा,

डयूरा, टेनेरा मजबूत हरीतिमागम, गोलाकार गुच्छा, टेनेरा बौना, अकेला अनूठा फल, लंबा जीवन काल अथवा निधानी आयु, बड़ी गुठली, छोटी रैकिस तथा छोटे आकार के फल)। परिणामों से पता चला कि अद्वितीयतम मानक भिन्नता फलों की कुल संख्या (767.07) में पाई गई जबकि तदुपरान्त स्पाइकलेट्स की कुल संख्या (36.76), छिलका/फल का प्रतिशत (34.51), 500 ग्राम भार वाले फलों की संख्या (33.67) में पाई गई जबकि न्यूनतम मानक भिन्नता डंडल भार (0.16) एवं एकल गुठली भार (0.95) के लिए दर्ज हुई। भिन्नता गुणांक सबसे अधिक छिलका/फल प्रतिशत (60.24) एवं तदुपरान्त फलों की कुल संख्या (55.7), फलों का कुल भार (49.83) में जबकि सबसे कम तेल/शुष्क मध्य फलभित्ति (3.86) में दर्ज हुआ। एक आनुवंशिक स्टॉक में उच्च 38.86 प्रतिशत तेल – गुच्छा अनुपात दर्ज किया गया।

पराग नलिका वृद्धि पर परासरणी दबाव का प्रभाव (सुनील कुमार)

पराग ट्यूब वृद्धि पर परासरणी दबाव के प्रभाव का अध्ययन करने में BA 0.01 ग्राम + अगार 1.5 + शर्करा 11 ग्राम + PEG (विभिन्न सांद्रता) वाली मीडिया का प्रयोग किया गया जो कि प्रभावी पायी गया। जीनप्ररूपों में स्व: पात्रे अध्ययन के तहत अलग-अलग प्रतिक्रिया प्रकट हुई। पीईजी सांद्रता में वृद्धि करने पर पराग अंकुरण तथा पराग ट्यूब वृद्धि में कमी आई। 59 से 755 μm की ट्यूब लंबाई वृद्धि के साथ दबाव मीडिया में पीएन-66 (पिसिफेरा) के पराग ने अंकुरण के लिए कम समय (1 घंटे के भीतर) लिया जिससे इसकी ओजता का पता चलता है। जबकि, 40 प्रतिशत PEG पर 1196 μm (4 घंटे के बाद) की पराग ट्यूब लंबाई के साथ उच्चतर परासरणी सहिष्णुता दर्शाने वाला पीएन-15 अकेला जीनप्ररूप है।

पराग कण आकार एवं आकृति पर परासरणी दबाव (PEG) का प्रभाव (सुनील कुमार)

कैविटी स्लाइड्स में PEG- 6000 की भिन्न सांद्रता का उपयोग करके व्यापक परासरणी दबाव में भिन्न जीनप्ररूपों के तेल ताड़ पराग दानों को सीधा आजमाया गया। विभिन्न जीनप्ररूपों के पराग कणों में परासरणी समायोजन (OA) की क्रियाविधि का निर्धारण करने में पराग पैरामीटरों के अनुपात का उपयोग किया गया। विश्लेषित किए गए जीनप्ररूपों में से, GB 25(B PN 335), /A H" 1 (0.9) के पराग में कहीं अधिक स्वाभाविक परासरणी समायोजन और इसके कारण इसकी सूखा सहिष्णुता प्रकट हुई

नवीन रोपित परीक्षण (पी. नवीन कुमार)

प्रतिवर्ष < 30 सेमी. की लक्षित ऊंचाई वृद्धि और प्रतिवर्ष प्रति हेक्टेयर 6-7 टन तेल की लक्षित उत्पादकता के साथ पांच बौने डयूरा क्रास के साथ 8 मीटर X 8 मीटर X 8 मीटर के फासले पर रोपण करते हुए बौने डयूरा के विकास पर एक नया अनुसंधान परीक्षण लिया गया।

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

अधिकारियों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, तमिल नाडु, मेघालय व आन्ध्र प्रदेश से जुड़े कुल 139 अधिकारियों के लिए 6 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, पालोड में दिनांक 12 जनवरी, 2017 को तिरुनेलवेली जिला, तमिल नाडु के अधिकारियों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।



किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

में आन्ध्र प्रदेश व ओडिशा के कुल 333 किसानों के लिए 9 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।



आन्ध्र प्रदेश और मिजोरम के कुल 336 किसानों के लिए "तेल ताड़ की खेती" विषय पर एक-एक दिन के कुल पांच के अन्तर्गत आयोजित का आयोजन किया गया।

मेरा गांव – मेरा गौरव कार्यक्रम

मेरा गांव – मेरा गौरव कार्यक्रम के अंतर्गत क्लस्टर युक्ति में चलाचिन्तालापुडी, पश्चिम गोदावरी जिला, आन्ध्र प्रदेश में 15 हेक्टेयर तेल ताड़ रोपण में पत्ती वेब वॉर्म तथा बैंग वॉर्म के नाशीजीव प्रबंधन का प्रदर्शन किया गया।



कुचीमपुडी गांव (पेदवेगी मण्डल) में किसानों के लिए जैविक खेती अथवा प्राकृतिक खेती पर एक कौशल प्रदर्शन एवं तकनीकी मार्गदर्शन कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 4 मार्च, 2017 को किया गया।



मृदा स्वास्थ्य कार्डों का वितरण आन्ध्र प्रदेश के पश्चिम गोदावरी जिले के डेन्डुलुरु मण्डल में मेरा गांव – मेरा गौरव के तहत अंगीकृत किए गए प्रत्येक गांव से तेल ताड़ रोपण से मृदा एवं पत्ती नमूने संकलित किए गए और दिनांक 20 फरवरी, 2017 को संस्थान के स्थापना दिवस पर किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किए गए।



किसान प्रक्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, पालोड द्वारा दिनांक 13 जनवरी, 2017 को मेरा गांव – मेरा गौरव कार्यक्रम के तहत उझमालकल गांव के किसानों के लिए "काली मिर्च की उन्नत खेती" विषय पर एक किसान प्रक्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मॉडल प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन

दिनांक 15 - 22 दिसम्बर, 2016 की अवधि के दौरान "खेती क्षेत्रफल एवं उत्पादन को बढ़ाने के लिए तेल ताड़ प्रौद्योगिकी के प्रसार हेतु आईसीटी टूल्स का अनुप्रयोग" विषय पर मॉडल प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया।

एसएमएस/वॉयस मैसेज के माध्यम से प्रौद्योगिकी प्रसार

तेल ताड़ की खेती करने वाले 13 राज्यों के तेल ताड़ हितधारकों के 6,33,933 मोबाइल डाटाबेस को चार स्थानीय भाषाओं में वॉयस कॉल के रूप में मोबाइल सेवाओं के माध्यम से कुल 104 तेल ताड़ प्रौद्योगिकियों का प्रसार किया गया।

प्रदर्शनियों में भागीदारी

संस्थान द्वारा विभिन्न प्रदर्शनियों में भागीदारी :-

- दिनांक 22 - 28 नवम्बर, 2016 को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में "अंतर्राष्ट्रीय सस्यविज्ञान कांग्रेस" के अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी



- दिनांक 17 - 18 दिसम्बर, 2016 को डॉ. वाई.एस. आर. बागवानी विश्वविद्यालय, वेंकटरमन्नागुडेम, पश्चिम गोदावरि जिला, आन्ध्र प्रदेश में उद्यान मेला के अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी
- दिनांक 24 - 25 नवम्बर, 2016 को तिरुवनंतपुरम, केरल में कंदीय खाद्य उत्सव के अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी
- दिनांक 20 - 22 अक्टूबर, 2016 को सीटीसीआरआई, श्रीकरयम, तिरुवनंतपुरम, केरल में "आदिवासी समुदाय की आजीविका एवं कल्याण के लिए उष्णकटिबंधीय कंदाकार फसलें" पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर प्रदर्शनी
- दिनांक 1 - 5 दिसम्बर, 2016 को तिरुवनंतपुरम, केरल में "कृषि प्रसंस्करण एवं मूल्य वर्धन (VAIGA - 2016)" पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला के अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी

प्रदर्शन परीक्षण

- छलाचिन्तालापुडी गांव, द्वारका तिरुमुला मण्डल, पश्चिम गोदावरि जिला, आन्ध्र प्रदेश में तेल ताड़ के प्रमुख कीट - नाशीजीवों नामतः बैग वॉर्म, मेटिसा प्लाना, तथा पत्ती वेब वॉर्म, ऐक्रिया मेयरिकी के प्रबंधन हेतु



रासायनिक पीड़कनाशियों (यथा मोनोक्रोटोफॉस, डेल्टामेथ्रिन) तथा पीड़कनाशी अनुप्रयोग विधियों (यथा तना टीका, जड़ फीडिंग एवं हवाई छिड़काव) पर प्रदर्शन परीक्षण आयोजित किए गए।

नैदानिकी दौर

- माथुर, आर.के.; रविचन्द्रन, जी. एवं मनोरमा, के. ने दिनांक 3 मार्च, 2017 को आन्ध्र प्रदेश के पश्चिम गोदावरि जिले में मोरमपुडी तथा राजामहेन्द्रवरम तेल ताड़ बीज बगीचों का दौरा किया और दोनों बगीचों के लिए सुधारात्मक उपाय सुझाए।
- प्रसाद, एम.वी. एवं नवीन कुमार, पी. ने दिनांक 19 - 21 अक्टूबर, 2016 को मिजोरम के कोलासिब जिले में किसानों के खेतों में नैदानिकी दौरे किए और कली सड़न रोग की रोकथाम के लिए क्राउन सर्जरी को प्रदर्शित किया।
- मनोरमा, के. ने आन्ध्र प्रदेश के नेल्लोर जिले में पदामती कन्डरिगा गांव में श्री चिरंजीवी के तेल ताड़ बगीचे में नैदानिकी प्रक्षेत्र दौरा किया और पोषक तत्व प्रबंधन रणनीतियों के बारे में सुझाव दिया।
- मनोरमा, के. एवं रामचन्द्रु, के. ने दिनांक 28 दिसम्बर, 2016 को आन्ध्र प्रदेश के पश्चिम गोदावरि जिले में बोरमपलेम गांव में श्री पाण्डु रंगा राव के खेत में नैदानिकी खेत दौरा किया और गैनोडर्मा से संक्रमित ताड़ के लिए कीट रोकथाम के उपाय सुझाए।
- सुनील कुमार ने केरल के कोझीकोड जिले के नावेली इस्टेट, थोट्टिलपलेम में अनूठे तेल ताड़ रोपण जिसमें समुद्र तल से 2000 फीट ऊंचाई पर भी पर्वतीय क्षेत्र में तेल ताड़ का अच्छा प्रदर्शन हुआ, को देखने के लिए दिनांक 27 अक्टूबर, 2016 को दौरा किया और वहां

ताड़ की पत्तियों को हवा नुकसान से बचाने के लिए हवा अवरोध की स्थापना करने के लिए उपाय सुझाए।

- सुनील कुमार ने दिनांक 28 अक्टूबर, 2016 को वायनाड जिले में मनन्थावाडी में ओपीडीपी नर्सरी और निकटवर्ती तेल ताड़ रोपण का दौरा किया और नियमित सिंचाई करके, उर्वरक अनुप्रयोग और कड़ाई से कल्लन करके नर्सरी में सुधार लाने तथा उसका रख-रखाव करने के संबंध में नर्सरी प्रभारी का मार्गदर्शन किया।
- सुनील कुमार ने दिनांक 25 जनवरी, 2017 को केरल के कोल्लम जिले में ओपीआईएल येरूर इस्टेट का नैदानिकी दौरा किया जहां कली सड़न तथा ऑरेंज धब्बा रोग का प्रकोप पाया गया था। इन्होंने रोग की रोकथाम के उपाय सुझाए।
- वैज्ञानिकों के एक समूह (मनोरमा, के.; रामचन्द्रु, के.; नवीन कुमार, पी.; सर्वनन, एल. एवं प्रवीणा दीप्ति के) ने अक्टूबर, 2016, जनवरी एवं मार्च, 2017 के दौरान टी. नरसापुर मण्डल, पश्चिम गोदावरि जिला, आन्ध्र प्रदेश में मेरा गांव - मेरा गौरव के तहत अंगीकृत किए गए गांवों का दौरा किया और चिन्हित समस्याओं के लिए सुधारात्मक उपाय सुझाए। वैज्ञानिक समूह द्वारा उद्यान अथवा बगीचा बायोमास की रिसाइक्लिंग, मृदा एवं पत्ती नमूनों का संकलन, एवं तेल ताड़ बगीचे में पादप संरक्षण का भी प्रदर्शन किया गया।



- महेश्वरप्पा, एच.पी., परियोजना समन्वयक (ताड़) ने दिनांक 22 मार्च, 2017 को कृषि एवं बागवानी अनुसंधान स्टेशन, बावीकरे का दौरा किया और नए परीक्षणों की शुरुआत के लिए भूमि विकसित करने तथा रोपण के लिए केन्द्र में तैयार नर्सरी के कार्य में हुई प्रगति की समीक्षा की।



प्रकाशन

अनुसंधान लेख

बहेरा, एस.के.; सुरेश, के.; राव, बी.एन.; रामचन्द्रुडु, के.; मनोरमा, के. एवं हरिनारायण, पी. (2017)। सॉयल फर्टिलिटी एंड यील्ड लिमिटिंग न्यूट्रिएन्ट्स इन ऑयल पॉम प्लान्टेशन ऑफ नॉर्थ-ईस्टर्न स्टेट मिजोरम ऑफ इंडिया, जर्नल ऑफ प्लान्ट न्यूट्रिशन (प्रेस में), DOI: 10.1080/01904167.2016.1264592.

कल्याण बाबू, बी.; माथुर, आर.के.; कुमार, पी.एन.; रामाजयम, डी.; रविचन्द्रन, जी. वेणु एम.वी.बी. (2017)। डेवलेपमेन्ट, आईडेन्टिफिकेशन एण्ड वैलीडेशन ऑफ CAPS मार्कर फॉर SHELL ट्रेट विच गवर्न्स डयूरा, पिसिफेरा एण्ड टेनेरा फ्रूट फॉर्मस इन ऑयल पॉम (एलेइस गिनीन्सिस जैक) PLoS ONE 12 (2): e0171933. doi:10.1371/journal.pone.0171933

माधवीलता, पी.; कल्याण, एम. एवं मनोरमा, के. (2016)। इन्फ्लूयेन्स ऑफ प्लान्टेशन ऐज ऑन प्रोडक्शन परफार्मेंस ऑफ ऑयल पॉम इन आन्ध्र प्रदेश, जर्नल ऑफ रिसर्च ANGRAU, 44 (3 व 4) 99 – 103.

रविचन्द्रन, जी.; मुरुगेसन, पी.; नवीन कुमार, पी.; माथुर, आर.के. एवं रामाजयम, डी. (2016)। इफेक्ट ऑफ केमिकल्स ऑन डिसइन्टीग्रेशन ऑफ दि ओपरकुलम इन ऑयल पॉम (एलेइस गिनीन्सिस जैक) सीड्स फॉर अर्ली जर्मीनेशन, सीड साइन्स एंड टेक्नोलॉजी 44, 475 – 485. <http://doi.org/10.15258/sst.2016.44.3.16>

मनोरमा, के.; माथुर, आर.के.; सुरेश, के.; बहेरा, एस.के.; राव, बी.एन. एवं रामचन्द्रुडु, के. (2016)। इन्फ्लूयेन्स ऑफ वैदर पैरामीटर्स ऑफ फ्रेश फ्रूट बन्च यील्ड ऑफ ऑयल पॉम (एलेइस गिनीन्सिस जैक), विस्तारित सारांश अंक 3, चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय सस्यविज्ञान कांग्रेस, 22 – 26 नवम्बर, 2016.

तकनीकी बुलेटिन

कालिदास, पी.; बहेरा, एस.के.; सर्वनन, एल.; दीप्ति, के.पी.; सुरेश, के.; राव, बी.एन.; प्रसाद, एम.वी. एवं मनोरमा, के. (2017)। पेस्ट्स, डीजिज, न्यूट्रिएन्ट डिफिसियेन्सीज एंड डिसऑर्डर ऑफ ऑयल पॉम, तकनीकी बुलेटिन, भाकृअनुप-भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान, पेदवेगी, पश्चिम गोदावरि जिला, आन्ध्र प्रदेश, भारत, पीपी 160.

नरसिम्हा राव, बी.; सुरेश, के.; बहेरा, एस.के.; रामचन्द्रुडु, के. एवं मनोरमा, के. (2016)। इरीगेशन मैनेजमेन्ट इन ऑयल पॉम, भाकृअनुप – भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIOPR), पेदवेगी, पश्चिम गोदावरि जिला, आन्ध्र प्रदेश, भारत, पीपी 1 – 20.

नरसिम्हा राव, बी.; सुरेश, के.; बहेरा, एस.के.; रामचन्द्रुडु, के. एवं मनोरमा, के. (2017)। न्यूट्रिएन्ट मैनेजमेन्ट इन ऑयल पॉम, भाकृअनुप – भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान,

पेदवेगी, पश्चिम गोदावरि जिला, आन्ध्र प्रदेश, भारत, पीपी 1 – 28.

लोकप्रिय लेख

मुरुगेसन, पी.; सुनील कुमार, के. एवं माथुर, आर.के. (2016)। इनरिचिंग ऑयल पॉम जिनेटिक रिसोर्सिज, इण्डियन हॉर्टिकल्चर (जुलाई – अगस्त), 33 – 35.

मुरुगेसन, पी. (2017)। सस्टेनेबल डेवलेपमेन्ट ऑफ ऑयल पॉम एंड इनहेन्सिंग दि फार्मर्स इनकम, www.kisangyan.in पीपी 25 – 27.

नरसिम्हा राव, बी.; चन्द्र सूर्य राव, एम.; मनोरमा, के. एवं नरेश, एस. (2017)। ऑयल पॉम सागुलो नीति यजमान्यम – रायतुलाकु सुचानलू (तेल ताड़ में जल प्रबंधन – किसानों को सुझाव), अन्नदाता – मासिक तेलगु कृषि समाचार पत्रिका, 49 (3) : 26 – 28.

प्रसाद, एम.वी.; रामचन्द्रुडु, के. एवं विशाल, एस. (2017)। ऑयल पॉम सागु – मोक्कालू नटुटा मरियू मोदाती मूदु सम्वतसरालालो अन्तर पन्टाला पेम्पाकम – तेलगु (ऑयल पॉम कल्टीवेशन – प्लान्टिंग एंड कल्टीवेशन ऑफ इन्टर क्रॉप्स डूरिंग इनीशियल थ्री ईयर्स ऑयल पॉम प्लान्टेशन – अंग्रेजी), व्यवसायम – मासिक तेलगु कृषि समाचार पत्रिका, प्रो. जयशंकर तेलंगाना राज्य कृषि विश्वविद्यालय, फरवरी, 2017, पी 26 – 29.

प्रसाद, एम.वी.; राव, बी.एन. एवं विशाल, एस. (2017)। ऑयल पॉम लो सागु नीति यजमान्यम – तेलगु (तेल ताड़ में सिंचाई प्रबंधन), व्यवसायम – मासिक तेलगु कृषि समाचार पत्रिका, प्रो. जयशंकर तेलंगाना राज्य कृषि विश्वविद्यालय, मार्च, 2017, पी 17 – 18.

सुनील कुमार, के.; मुरुगेसन, पी. एवं रहाना, एस.एन. (2016)। हार्वेस्टिंग ऑयल पॉम एट राइट टाइम फेच मोर रिटर्न, इण्डियन हॉर्टिकल्चर, मई-जून, पी पी 3 – 9.

पुस्तक अध्याय

बहेरा, एस.के.; राव, बी.एन. एवं सुरेश, के. (2017)। सॉयल हैल्थ मैनेजमेन्ट इन प्लान्टेशन क्रॉप्स पुस्तक (सम्पादन : महेश्वरप्पा, एच.पी. एवं चौदप्पा, पी.) में "सॉयल हैल्थ मैनेजमेन्ट इन ऑयल पॉम", पीपी 115-144, टुडे एंड टूमॉरो पब्लिशर्स, नई दिल्ली, भारत

माथुर, आर.के.; नवीन कुमार, पी. एवं कल्याण बाबू, बी. (2016)। दिनांक 15 – 17 दिसम्बर, 2016 को भाकृअनुप – सीपीसीआरआई, कासरगोड, केरल में "लेवरेजिंग इनोवेशन सिस्टम इन प्लान्टेशन सेक्टर थ्रू वैल्यू एडीशन" रोपण फसलों पर आयोजित 22वें द्विवार्षिक सम्मेलन (PLACROSYM 22) के सार-संग्रह में "जिनेटिक रिसोर्सिज एंड जिनेमिक्स ऑफ ऑयल पॉम", सम्पादन : चौदप्पा, पी.; मुरलीधरन, के.; राजेश, एम.के. एवं रमेश, एस.वी., पीपी 19 – 34.

माथुर, आर.के.; सुनील कुमार, के. एवं मुरुगेसन, पी. (2016)।

डिस्टैन्ट हाइब्रीडाइजेशन इन हॉर्टिकल्चरल क्रॉप्स पुस्तक में "प्रोस्पेक्ट्स ऑफ इन्टर-स्पेसीफिक हाइब्रीडिड्स इन ऑयल पॉम", सम्पादन : एम.आर. दिनेश एवं एम. संकरम, एस्ट्रल इंटरनेशनल प्रा. लि., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित, पीपी 103 – 110

मुरुगेसन, पी. एवं कृष्ण कुमार, वी. (2016)। ऑर्गेनिक फार्मिंग इन प्लान्टेशन क्रॉप्स पुस्तक में "ऑर्गेनिक फार्मिंग इन ऑयल पॉम", पीपी 250 – 281, दया पब्लिशिंग हाउस, एस्ट्रल इंटरनेशनल प्रा. लि. का एक प्रभाग

सुनील कुमार, के.; माथुर, आर.के. एवं मुरुगेसन, पी. (2016)। दिनांक 15 – 17 दिसम्बर, 2016 को भाकृअनुप – सीपीसीआरआई, कासरगोड, केरल में "लेवरेजिंग इनोवेशन सिस्टम इन प्लान्टेशन सेक्टर थ्रू वैल्यू एडीशन" रोपण फसलों पर आयोजित 22वें द्विवार्षिक सम्मेलन (PLACROSYM 22) के सार-संग्रह में "यील्ड स्टेबिलिटी ऑफ सेकण्ड साइडल ऑयल पॉम फ़ैमिलीज फॉम थोडुपुझा", सम्पादन : चौदप्पा, पी.; मुरलीधरन, के.; राजेश, एम.के. एवं रमेश, एस.वी., पीपी 19 – 34.

सुनील कुमार, के.; मुरुगेसन, पी.; रहाना, एस.एन. एवं माथुर, आर.के. (2016)। बागवानी के माध्यम से किसानों की आय दोगुना करने पर एचएसआई द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 7वीं भारतीय बागवानी कांग्रेस के सार-संग्रह में "इन्ट्रोड्यूसिंग ऑफ ओलिफेरा जीन्स फॉर इम्प्रूवमेन्ट ऑफ कल्टीवेटिड ऑयल पॉम (एलेइस गिनीन्सिस)", सम्पादन : प्रीतम कालिया, एस.के. सिंह, मनीष श्रीवास्तव, आर.आर. शर्मा, जय प्रकाश, डी.वी.एस. राजू एवं ए.के. गोस्वामी, पोस्टर संख्या 10, पीपी 369 – 370.

सुनील कुमार, के.; माथुर, आर.के.; कल्याण बाबू, बी. एवं मुरुगेसन, पी. (2017)। बायोटेक्नोलॉजी ऑफ प्लान्टेशन क्रॉप्स पुस्तक में "ऑयल पॉम", दया पब्लिशिंग हाउस, आईएसबीएन : 978-93-5124-836-1, पीपी 241-260.

सुरेश, के.; बहेरा, एस.के.; मनोरमा, के. एवं राव, बी.एन. (2017)। इम्पैक्ट ऑफ क्लाइमेट चेंज ऑन प्लान्टेशन क्रॉप्स पुस्तक में "ऑयल पॉम", सम्पादन : हेब्बर, के.बी.; नरेश कुमार, एस. एवं चौदप्पा, पी., एस्ट्रल इंटरनेशनल प्रा. लि., नई दिल्ली, भारत

सार-संग्रह

मेरी रानी, के.एल. एवं प्रसाद, एम.वी. (2016)। "एप्लीकेशन ऑफ आईसीटी टूल्स फॉर डिसेमिनेशन ऑफ ऑयल पॉम टेक्नोलॉजी एंड इनक्रीजिंग एरिया एंड प्रोडक्शन" पर मॉडल प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के व्याख्यानों का सार-संग्रह, भाकृअनुप – भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान, पेदवेगी, पश्चिम गोदावरि जिला, आन्ध्र प्रदेश, भारत, पृष्ठ 123

पेम्फलेट्स

प्रसाद, एम.वी. एवं मेरी रानी, के.एल. (2016)। पेम्फलेट्स-

“ऑयल पॉम मोबाइल ऐप्स-रायतुलु मरियु क्षेत्र अडि कुरुलला कोसम- तेलगु (किसानों एवं खेत स्तरीय प्रसार कार्मिकों के लिए ऑयल पॉम मोबाइल ऐप्स), भाकूअनुप-भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान, पेदवेगी, पश्चिम गोदावरि जिला, आन्ध्र प्रदेश, भारत, पृष्ठ 1

प्रसाद, एम.वी. एवं मेरी रानी, के.एल. (2016)। पम्फलेट्स – “किसानों व खेत स्तरीय प्रसार कार्मिकों के लिए ऑयल पॉम मोबाइल ऐप्स”, भाकूअनुप – भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान, पेदवेगी, पश्चिम गोदावरि जिला, आन्ध्र प्रदेश, भारत, पी – 1

ई-प्रकाशन (C-DAC के साथ)

मेरी रानी, के.एल. एवं प्रसाद, एम.वी. (2016)। “ऑयल पॉम कल्टीवेशन”-तेलगु

मेरी रानी, के.एल.; प्रसाद, एम.वी. एवं संजीव कुमार बहेरा (2016), ऑयल पॉम न्यूट्रिएण्ट्स – तेलगु

मेरी रानी, के.एल.; प्रसाद, एम.वी.; कालिदास, पी. एवं सर्वनन, एल. (2016)। ऑयल पॉम पेस्ट्स – तेलगु

मेरी रानी, के.एल.; प्रसाद, एम.वी.; एवं प्रवीण दीप्ति के. (2016)। ऑयल पॉम डीजिज – तेलगु

प्रसाद, एम.वी. एवं मेरी रानी, के.एल. (2016)। तेल ताड़ की खेती – हिन्दी

मेरी रानी, के.एल.; प्रसाद, एम.वी. एवं संजीव कुमार बहेरा (2016), “तेल ताड़ के सूक्ष्म पोषक तत्व” – हिन्दी

मेरी रानी, के.एल.; प्रसाद, एम.वी.; कालिदास, पी. एवं सर्वनन, एल. (2016)। “तेल ताड़ के कीट – नाशीजीव” – हिन्दी

मेरी रानी, के.एल.; प्रसाद, एम.वी.; एवं प्रवीण दीप्ति के. (2016)। “तेल ताड़ के रोग”-हिन्दी

प्रसार बुलेटिन

प्रसाद, एम.वी.; कालिदास, पी.; नरसिम्हा राव, बी.; सुरेश, के.; रामचन्द्रुडु, के.; प्रवीणा दीप्ति के.; मेरी रानी, के.एल.; सर्वनन, एल. एवं विशाल, एस. (2017)। ऑयल पॉम सागु – तेलगु (तेल ताड़ की खेती), भाकूअनुप – भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान, पेदवेगी, पश्चिम गोदावरि जिला, आन्ध्र प्रदेश, भारत, पृष्ठ 68.

प्रसाद, एम.वी.; कालिदास, पी.; नरसिम्हा राव, बी.; सुरेश, के.; रामचन्द्रुडु, के.; प्रवीणा दीप्ति के.; मेरी रानी, के.एल.; सर्वनन, एल.; रविचन्द्रन, जी.; रामाजयम, डी.; प्रीति, पी. एवं विशाल, एस. (2017)। इन्नाई पनई सगुबडी – तमिल (तेल ताड़ की खेती), भाकूअनुप – भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान, पेदवेगी, पश्चिम गोदावरि जिला, आन्ध्र प्रदेश, भारत, पृष्ठ 68.

समितियों/विशेषज्ञ दल में सदस्यता

- माथुर, आर.के. ने कृषि एवं सहकारिता विभाग, भारत सरकार, कृषि भवन, नई दिल्ली में NMOOP की स्थायी समिति बैठक में भाग लिया।
- मुरुगेसन, पी. एवं सुनील कुमार, के. – सदस्य : विशेषज्ञ समिति, ओपीआईएल – तेल ताड़ रोपण में अंतर – फसलचक्र के संभाव्यता अध्ययन हेतु
- मुरुगेसन, पी. – विशेषज्ञ समिति सदस्य (ओपीआईएल – रोपण कामगारों के लिए न्यूनतम मजदूरी का निर्धारण करने हेतु केरल सरकार द्वारा गठित समिति)
- सुनील कुमार – दिनांक 1 नवम्बर, 2016 को भाकूअनुप – सीपीसीआरआई, कासरगोड, केरल में “लेवरेजिंग इनोवेशन सिस्टम इन प्लान्टेशन सेक्टर थ्रू वैल्यू एडीशन” रोपण फसलों पर आयोजित 22वें द्विवार्षिक सम्मेलन (PLACROSYM 22) के कार्यसमिति सदस्य
- मुरुगेसन, पी. – सदस्य, साइंस काउन्सिल ऑफ इण्डियन काउन्सिल ऑफ फूड एण्ड एग्रीकल्चर (एफ. सं. ICFA/SC/2016, दिनांक 16 अक्टूबर, 2016) – मनोनीत सदस्य
- मनोरमा, के. को दिनांक 15 दिसम्बर, 2016 से 14 दिसम्बर, 2017 की अवधि के लिए तकनीकी कार्मिकों के मेरिट पदोन्नति मामलों पर विचार करने वाली सीटीआरआई मूल्यांकन समिति के लिए कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल (ASRB) द्वारा बाह्य सदस्य मनोनीत किया गया।
- राव, बी.एन. – सदस्य : संस्थान प्रबंधन समिति (IMC): भाकूअनुप – केन्द्रीय द्विपीय कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR - CIARI), पोर्ट ब्लेयर ने दिनांक 18 अक्टूबर, 2016 को आईएमसी बैठक में भाग लिया।

प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में भागीदारी

- कल्याण बाबू ने दिनांक 8 से 28 फरवरी, 2017 को भाकूअनुप – भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR - IASRI), नई दिल्ली में “कृषि में अगली पीढ़ी अनुक्रमण (NGS) डाटा विश्लेषण के लिए कम्प्यूटेशनल तकनीकें” विषय पर 21 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।
- प्रीति, पी. ने दिनांक 2 – 22 नवम्बर, 2016 को भाकूअनुप – भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIHR), बंगलुरु में “मात्रात्मक एवं गुणात्मक नुकसान में कमी लाने के लिए फलों, सब्जियों व फूलों के तुड़ाई उपरान्त प्रबंधन में नवीनतम प्रगति” विषय पर आयोजित शीतकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

वार्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम

- प्रसाद, एम.वी. ने दिनांक 7 – 8 फरवरी, 2017 को भाकूअनुप – भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIOPR), पेदवेगी के 14 स्टाफ सदस्यों के लिए “प्रोत्साहन एवं पारस्परिक संबंध” विषय पर आयोजित वार्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय कार्य किया।



- रविचन्द्रन, जी. ने दिनांक 27 – 28 मार्च, 2017 को भाकूअनुप – भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, पालोड, केरल के स्टाफ सदस्यों के लिए “प्रोत्साहन एवं पारस्परिक संबंध” विषय पर आयोजित वार्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय कार्य किया।



- मेरी रानी, के.एल. ने दिनांक 2 – 9 नवम्बर, 2016 को भाकूअनुप – भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान, पेदवेगी के तकनीकी स्टाफ सदस्यों के लिए “एमएस ऑफिस एंड डाटा इन्ट्री” विषय पर आयोजित वार्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम (ATP) का समन्वय कार्य किया।



बैठकों में भागीदारी एवं प्रस्तुत व्याख्यान/पेपर

- माथुर, आर.के. ने दिनांक 18 – 20 जनवरी, 2017 को भाकूअनुप – भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में “वनस्पति तेल उत्पादन बढ़ाने हेतु जलवायु स्मार्ट प्रौद्योगिकियां” विषय पर आयोजित ब्रेनस्टॉर्मिंग सत्र में भाग लिया।
- माथुर, आर.के. ने दिनांक 19 – 20 फरवरी, 2017 को बायोवर्सिटी इंटरनेशनल, नई दिल्ली का दौरा किया।
- मनोरमा, के. ने बागवानी विभाग, नेल्लोर जिला द्वारा दिनांक 27 जनवरी, 2017 को सुलरपेट मण्डल के पदामती कान्दरिगा गांव तथा दिनांक 28 जनवरी, 2017 को वेंकटागिरी मण्डल के तीर्थमपाडु गांव में आयोजित दो तेल ताड़ जागरूकता कार्यक्रमों में भाग लिया और व्याख्यान प्रस्तुत किया।
- मुरुगेसन, पी. ने दिनांक 14 दिसम्बर, 2016 को “किसानों

की आय को दोगुना करने एवं क्रेडिट प्रवाह को बढ़ाने हेतु रणनीतियां एवं मुद्दे” विषय पर रोपण फसलों पर नाबार्ड द्वारा ऊटी में आयोजित कार्यशाला में भाग लिया और आमंत्रित व्याख्यान प्रस्तुत किया।

- मुरुगुसन, पी. ने दिनांक 31 मार्च, 2017 को कृषि सम्मेलन हॉल, सचिवालय, चेन्नई – 9, तमिल नाडु में 24वीं परियोजना प्रबंधन समिति (PMC) बैठक तथा राज्य स्तरीय स्थायी समिति की बैठक में भाग लिया।
- नवीन कुमार, पी. ने दिनांक 22 फरवरी, 2017 को बंगलुरु में कर्नाटक राज्य की तेल ताड़ विकास परियोजना (OPDP) की परियोजना प्रबंधन समिति (PMC) की बैठक में भाग लिया।
- नवीन कुमार, पी. ने दिनांक 10 जनवरी, 2017 को नई दिल्ली में आईसीएफए द्वारा आयोजित बागवानी पर राष्ट्रीय गोलमेज बैठक में भाग लिया।
- रामचन्द्रु, के. ने दिनांक 22 नवम्बर, 2016 को कृषि विज्ञान केन्द्र, डॉ. वाई.एस.आर.एच.यू. द्वारा वीरमपलेम, पश्चिम गोदावरी जिला, आन्ध्र प्रदेश में “तेल ताड़ का उत्पादन एवं संरक्षण प्रौद्योगिकी” विषय पर आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में संसाधन व्यक्ति के रूप में भाग लिया।

वैयक्तिक (स्थानान्तरण/नई नियुक्ति/सेवानिवृत्ति)

- गणेश, एन.वी., वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने भाकृअनुप – केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान (ICAR - CIAE), भोपाल से स्थानान्तरण होने पर दिनांक 13 फरवरी, 2017 को संस्थान में कार्यभार ग्रहण किया।
- आनंद राव, एम., वरिष्ठ तकनीकी सहायक (प्रयोगशाला) की पदोन्नति तकनीकी अधिकारी (प्रयोगशाला) के अगले उच्चतर ग्रेड में हुई।
- रामाजयम, डी. वरिष्ठ वैज्ञानिक को राष्ट्रीय केला अनुसंधान केन्द्र, तिरुचिरापल्ली में स्थानान्तरण होने पर दिनांक 10 मार्च, 2017 को संस्थान से कार्यमुक्त किया गया।
- श्री एम. रामबाबू, वरिष्ठ तकनीशियन (खेत/फार्म) की पदोन्नति तकनीकी सहायक के अगले उच्चतर ग्रेड में हुई।
- अप्पा राव, एम. कुशल सहायी स्टाफ एवं गोपाल कृष्ण, बी. कुशल सहायी स्टाफ को क्रमशः 18 अगस्त, 2016 तथा 22 दिसम्बर, 2016 से एमएसीपी के तहत रूपये 1800/- से अगले उच्चतर ग्रेड पे रूपये 1900/- में वित्तीय उन्नयन प्रदान किया गया।
- अनिल कुमार, पी., तकनीशियन, भाकृअनुप – भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, पालोड को वरिष्ठ तकनीशियन के अगले उच्चतर ग्रेड में पदोन्नति प्रदान की गई।

शोक संदेश

- श्री एस.के. सैदा, कनिष्ठ लिपिक, भाकृअनुप – भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIOPR), पेदवेगी का बीमारी के कारण दिनांक 6 मार्च, 2017 को आकस्मिक निधन हो गया।

हासिल मान्यता/पुरस्कार

- सर्वनन, एल. को दिनांक 17 फरवरी, 2017 को जैविक दबाव प्रबंधन रणनीतियां : चुनौतियां एवं पर्यावरणीय सामंजस्य विषय पर आयोजित 12वें राष्ट्रीय सम्मेलन में कृषि कीटविज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए फेलो ऑफ सोसायटी फॉर प्लान्ट प्रोटेक्शन साइन्सिज, नई दिल्ली पुरस्कार प्रदान किया गया।



- सर्वनन, एल. ने एजुकेशनएक्सपो टीवी, रिसर्च एंड ब्राण्डिंग कम्पनी, नोएडा द्वारा प्रस्तुत अनुसंधान में उत्कृष्टता – साउथ एशियन एजुकेशन अवार्ड्स-2017 प्राप्त किया।

- कल्याण बाबू, बी. को दिनांक 6 – 9 नवम्बर, 2016 को नई दिल्ली में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, नीति एवं भागीदारी पर प्रथम अंतर्राष्ट्रीय कृषि जैव-विविधता कांग्रेस में बी. कल्याण बाबू एवं साथी द्वारा लिखे एवं प्रस्तुत पेपर “डेवलेपमेन्ट, आईडेंटिफिकेशन एंड वैलीडेशन ऑफ CAPS मार्कर फॉर शेल ट्रेट गवर्निंग ड्यूरा, पिसिफेरा एंड टेनेरा फ्रूट फॉर्मर्स इन ऑयल पॉम” के लिए सर्वश्रेष्ठ पोस्टर पुरस्कार प्रदान किया गया।
- प्रीति, पी. ने दिनांक 22 – 24 दिसम्बर, 2016 को आन्ध्र लोयोला कॉलेज, विजयवाडा में “कृषि, खाद्य एवं पर्यावरण विज्ञान में नई तकनीकें” विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में अपने पेपर शीर्षक “फिजिकल एंड केमिकल प्रापर्टीज ऑफ डिलिग्नीफाइड फाइबर एक्सट्रैक्टिड फॉम कमर्शियल बैनाना कल्टीवर्स” के लिए सर्वश्रेष्ठ मौखिक प्रस्तुतिकरण पुरस्कार प्राप्त किया।

परामर्शी सेवाएं

- राव, बी.एन.; कालिदास, पी. एवं सुरेश, के. (2016)। चित्तूर जिला, आन्ध्र प्रदेश के येरपेडु, थोट्टेमबेडु, श्रीकलाहस्ती, नागारी, विजयापुरम तथा केवीबी पुरम मण्डल में तेल ताड़ की खेती के लिए संभाव्यता अध्ययन, भाकृअनुप – (परामर्शी परियोजना)
- नरसिम्हा राव, बी.; रविचन्द्रन, जी. एवं बहेरा, एस.के. (2016)। असम के बोडोलैण्ड टैरीटोरियल काउन्सिल एरिया, भारत में तेल ताड़ की खेती के लिए संभाव्यता अध्ययन, (परामर्शी परियोजना)
- रविचन्द्रन, जी.; माथुर, आर.के.; नरसिम्हा राव, बी. एवं मेरी रानी, के.एल। गुणवत्ता तेल ताड़ संकर बीज उत्पादन एवं बीज बगीचे का रख-रखाव, राजामुन्द्री, आन्ध्र प्रदेश (आन्ध्र प्रदेश सरकार द्वारा वित्तीय सहायता) (परामर्शी परियोजना)

भाकृअनुप – भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIOPR) में अन्य आयोजन

स्वच्छ भारत अभियान

अक्टूबर, 2016 के दौरान संस्थान परिसर में तथा साथ ही गोपन्नापलेम, लक्ष्मीपुरम गांवों, एमआरसी कॉलोनी में स्वच्छ भारत अभियान चलाया गया। दिनांक 17 अक्टूबर, 2016 को स्वच्छ भारत शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर स्कूली बच्चों के लिए अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और पुरस्कार वितरित किए गए।



हितधारकों को परामर्श

तेल ताड़ सेक्टर में प्रमुख मुद्दों के समाधान हेतु SOLIDARIDAD, नई दिल्ली के साथ मिलकर भारतीय तेल ताड़ टिकाऊ क्षमता फ्रेमवर्क विकसित करने पर चर्चा करने हेतु दिनांक 6 अक्टूबर, 2016 को हितधारक परामर्श बैठक का आयोजन किया गया।

कृषि शिक्षा दिवस

कृषि शिक्षा के बारे में जागरूकता पैदा करने हेतु स्कूली बच्चों के बीच प्रतियोगिता का आयोजन करके दिनांक 3 दिसम्बर, 2016 को संस्थान में कृषि शिक्षा दिवस समारोह मनाया गया।

विश्व मृदा दिवस

संस्थान में दिनांक 5 दिसम्बर, 2016 को विश्व मृदा दिवस मनाया गया जिसके तहत तेल ताड़ किसानों की बैठक का आयोजन किया गया और छात्रों के बीच मृदा एवं मृदा स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता का सृजन किया गया। किसानों और छात्रों को टिकाऊ फसल उत्पादन के लिए मृदा तथा मृदा स्वास्थ्य को बनाये रखने के महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डॉ. आर.के. माथुर,



निदेशक ने किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किए। इस कार्यक्रम में लगभग 50 किसानों व 80 छात्रों ने भाग लिया।



जय किसान – जय विज्ञान

संस्थान द्वारा दिसम्बर, 2016 के अंतिम सप्ताह में जय किसान – जय विज्ञान कार्यक्रम आयोजित किया गया।



राष्ट्रीय उत्पादकता सप्ताह

संस्थान में दिनांक 12 – 18 फरवरी, 2017 के दौरान राष्ट्रीय उत्पादकता सप्ताह मनाया गया।



स्थापना दिवस

दिनांक 19 फरवरी, 2017 को भाकृअनुप – भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान द्वारा अपना 23वां स्थापना दिवस मनाया गया जिसके अंतर्गत पूरे दिन भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया यथा तेल ताड़ की खेती के विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान, प्रदर्शन, पारस्परिक सत्र एवं मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण। इस कार्यक्रम में मेरा गांव – मेरा गौरव के तहत अंगीकृत गांवों के किसानों ने भाग लिया।



राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

पूरे उत्साह एवं उमंग के साथ "रमन प्रभाव" की महान खोज की याद में दिनांक 28 फरवरी, 2017 को पेदवेगी में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह मनाया गया।



संस्थान अनुसंधान समिति (IRC) की बैठक

दिनांक 16 – 17 मार्च, 2017 को संस्थान अनुसंधान समिति (IRC) की बैठक आयोजित की गई।

विशिष्ट आगन्तुक

1. डॉ. पी. रथिनम, पूर्व निदेशक, ने दिनांक 6 अक्टूबर, 2016 को
2. डॉ. बी. राजेन्द्र, संयुक्त सचिव (तिलहन), कृषि एवं सहकारिता विभाग भारत सरकार दिनांक 4 नवम्बर, 2016 को
3. डॉ. ए. विष्णु वर्धन रेड्डी, निदेशक, भाकृअनुप – भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद दिनांक 2 फरवरी, 2017 को

क्षेत्रवार समाचार

कीट सहायतार्थ परागण पर दर्ज पेटेन्ट (जी. रविचन्द्रन एवं एल. सर्वनन)

"ए प्रोसेस एंड किट फॉर इनसेक्ट फ़ैसिलियेटेड कन्ट्रोल्ड पॉलीनेशन इन ऑयल पॉम (तेल ताड़ में कीट सहायतार्थ नियंत्रित परागण के लिए एक प्रक्रिया एवं किट)" प्रौद्योगिकी के लिए एक पेटेन्ट दर्ज कराया गया जिससे हाथ से किए जाने वाले संकरण के लिए पेड़ पर चढ़ने में तीन गुणा तक मेहनत को कम करने में मदद मिलेगी। इससे नियंत्रित परागण के माध्यम से अच्छी गुणवत्ता वाला बीज उत्पादन करने में काफी हद तक मदद मिलने की संभावना है। भारतीय पेटेन्ट आवेदन संख्या : 201641044994 A.

दिनांक 2 फरवरी, 2017 को पेटेन्ट कार्यालय पत्रिका में प्रकाशित, पीपी 3952

आगामी आयोजन

अगस्त, 2017 में "तेल ताड़ उत्पादन प्रौद्योगिकी" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

नवीन परियोजनाएं

भाकृअनुप – भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIOPR) के लिए के फार्मर फर्स्ट कार्यक्रम संघटक के अंतर्गत एक नई परियोजना शीर्षक "किसान-वैज्ञानिक एवं हितधारक इन्टरफेस के साथ संसाधन उपयोग प्रभावी प्रौद्योगिकियों के माध्यम से तेल ताड़ आधारित फसलचक्र प्रणाली की लाभप्रदता को बढ़ाना" को स्वीकृत किया गया है (₹ 85.54 लाख)।